Shri Jadav Payeng

Shri Jadav Payeng, popularly known as Forest Man of India, is an environmental activist and forestry worker from Assam. Over the course of several decades, he planted and tended trees on a sandbar of the river Brahmaputra turning it into a forest reserve.

2. Born on October 31, 1959, at Jorhat , Assam Shri Payeng studied up to class X. After completion of his study, he started taking care of his livestock at the sandbar area of the river Brahmaputra. At the age of 16, he encountered a large number of reptiles that had died due to excessive heat after floods washed them onto the tree-less sandbar. Moved by their plight, he began planting bamboo and other plants and also tried to conserve the self grown plants. Gradually it turned into vast area of forest within 30 years.

3. Shri Payeng's efforts became to be known to the authorities and the reporters in 2008, when they went to enquire about the wild life there. They were surprised to see such a large area of dense forest. The big conservation of forest has been known as 'Mulai Kathoni'. It was published in the various newspapers such as ' Dainik Janambhoomi' in 2010, in 'The Times of India' and in the TV channel DY -365.

4. Shri Payeng and his efforts have been the subject matter of a number of documentaries in the recent years including a documentary 'Forest Man' by William Doggolas Mekemaster and Mike Rishkey of Canada ,'Foresting Life by Shri Aroti Sribastob.

5. Shri Payeng has received various awards and honours including Diamond Award; DSP Black Rock, Sanctuary Wild Life Awards; Widlife Service Award, 2012; RBS Earth Heros Awards 2013; RBS Green Warrior Award; Ecological Restoration Award; Balipara Foundation Award, 2013 in Association with Sanctuary and local Partner Aaranyak; Karmavoqi Award, 2014 from The International Association of Lions Clubs etc.

श्री जादव पायेंग

आम तौर पर भारत के वन पुरुष के नाम से लोकप्रिय श्री जादव पायेंग असम के पर्यावरण तथा वानिकी से जुड़े कार्यकर्ता हैं। कई दशकों से उन्होंने ब्रह्मपुत्र नदी की बालूभित्ती पर पेड़ों को लगाकर तथा उनकी देखभाल कर उक्त क्षेत्र को एक वन रिजर्व में परिवर्तित कर दिया है।

2. आपका जन्म अक्तूबर 31, 1959 को जोरहट, असम में हुआ। आपने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की। पढ़ाई पूरी होने के बाद आपने ब्रह्मपुत्र नदी के बालूभित्ती क्षेत्र में अपने पशुधन की देखभाल आरम्भ की। जब आपकी आयु 16 वर्ष थी तब आपने हजारों की संख्या में ऐसे सरिसृप देखें, जो अत्यधिक गर्मी से मर जाने के बाद बाढ़ में बहकर वृक्ष-विहीन बालूभित्ती पर आ गए थे। उनकी यह दशा देखकर आपने, बांस और अन्य पेड़ों को लगाना शुरू किया तथा स्वयं ही उगने वाले पौधों को बचाने का प्रयास आरंभ किया। धीरे-धीरे इस क्षेत्र ने 30 वर्षों में एक बड़े जंगल का रूप ले लिया।

3. वर्ष 2008 में इस क्षेत्र में वन्य जीव की जानकारी प्राप्त करने गए प्राधिकारियों और संवाददाताओं को आपके प्रयासों की जानकारी मिली। उन्हें इतने बड़े घने वन को देखकर बेहद आश्चर्य हुआ। वन के इस महती संरक्षण को 'मोलई कथोनी' के नाम से जाना जाता है। इसे वर्ष 2010 में 'दैनिक जन्म-भूमि' और 'टाइम्स ऑव इंडिया' जैसे विभिन्न समाचार-पत्रों में प्रकाशित तथा टीवी चैनल डीवाई-365 में प्रसारित किया गया।

4. हाल के वर्षों में आपको और आपके प्रयासों को केन्द्र में रखकर कनाडा के विलियम डोगोलास मैकमास्टर और माइक रेस्की द्वारा 'फॉरेस्ट मेन' और श्रीमती आरती श्रीवास्तव द्वारा 'फॉरेस्टिंग लाइफ़' नामक वृत्त-चित्रों सहित अनेक वृत्त-चित्रों का निर्माण किया गया है।

5. आपको अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें डायमंड अवॉर्ड, डीएसपी ब्लैक रॉक, अभ्यारण्य वन्य जीव पुरस्कार, वन्य जीव सेवा पुरस्कार, 2012, आरबीएस अर्थ हीरोज़ अवॉर्ड 2013, आरबीएस ग्रीन वॉरियर अवॉर्ड, ईकालॅजिकल रेस्टोरेशन अवॉर्ड, अभ्यारण्य तथा स्थानीय साझेदार अरण्यक के सहयोग से बालीपाड़ा फाउंडेशन अवॉर्ड, 2013 और इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑव लायन्स क्लब से कर्मयोगी पुरस्कार, 2014 शामिल हैं।